2

एक समय की बात है...

रौमिला सोनी*

कहानी कहना और सुनना बच्चों के मानसिक विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम माना जाता है। कहानी सुनाना बच्चों की दिनचर्या की अत्यंत महत्वपूर्ण गतिविधि है, जो बच्चों को पढ़ाई के बोझ से राहत तो दिलाती है साथ ही उनकी कई अवधारणाओं को सरल तरीके से सुलझा भी देती है। आजकल के दौर में जहाँ टी.वी. व कार्टून बच्चों को अकेला कर देते हैं वहीं कहानियाँ बच्चों को आपस में तथा बड़ों के करीब लाकर आत्मीयता, शब्द भंडार में वृद्धि तथा सामाजिकता बढ़ाती हैं। निरंतर कहानी सुनना और पढ़ना बच्चों को साहित्य से जोड़कर रखता है।

एक समय की बात है... यह पंक्ति सुनते ही बच्चों के कान खड़े हो जाते हैं। उनका कौतूहल देखते ही बनता है।

कहानी- आखिर ऐसा क्यों है कि अधिकतर सभी को कहानियाँ सुनना अच्छा लगता है, कई लोग तो बहुत बखूबी तथा रुचिकर तरीके से कहानी सुनाते हैं। किंतु ऐसा क्या है स्वाति में? स्वाति कहानियों के बारे में आखिर क्या जानती है, जिससे जब वह कहानी सुनाती है तो सारे कक्षा का वातावरण सम्मोहित-सा हो जाता है, वह अपने अनुभवों और भाषा को बड़ी सरलता से कहानी की पुस्तक में उपलब्ध तस्वीरों से जोड़ देती है। ऐसा लगता है, जब स्वाति बोल रही है तो पुस्तक की तस्वीरें भी सजीव हो जाती हैं। उसे पता है कहानी में भाषा को किस तरह का उतार-चढ़ाव देना है। कहानी भाषा विकास का एक ऐसा पहलू है, जिससे बच्चों को छपी हुई सामग्री (print), ध्वनि (sound), लिखने के प्रति रुचि और उनके ज्ञान का विस्तार होता है।

कहानियाँ छोटे, बड़े, वृद्ध सभी को भाती हैं। कहानी कभी नाटक, फ़िल्म, दूरदर्शन के धारावाहिक, कठपुतली के खेल अथवा रंगमंच पर नाटक के रूप में सभी को आकर्षित करती आई है।

बच्चों को कहानी सुनाना, उनका ध्यान बनाए रखना एक कला है।

क्या सभी लोग कहानी मनोरंजक तरीके से सुना पाते हैं? शायद हाँ! शायद नहीं! दरअसल कहानी कहना एक कला है, किंतु क्या टेलीविज़न और इंटरनेट के युग में बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी से कहानी सुनना पसंद

* प्रवक्ता, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली

करते हैं? और इससे भी बड़ा प्रश्न, 'क्या हम अपने बच्चों को कहानी सुनाते हैं या कहानी सुनाने के लिए समय निकाल पाते हैं?' ऐसे ही कई प्रश्न बड़े शहरों में रहने वाले लोगों के मस्तिष्क में उभरते हैं।

कहानी सुनने-सुनाने की प्रथा बहुत पुराने समय से चली आ रही है। जो मज़ा दादा-दादी, नाना-नानी व माता-पिता से कहानी सुनने में आता है, उसकी तो बात ही निराली होती है, क्योंकि इनके पास तो लोककथाओं तथा धार्मिक कथाओं का भंडार होता है। और अगर बचपन से ही छोटे बच्चों को कहानी की सचित्र पुस्तकों के माध्यम से कहानी सुनाई जाए तो बच्चों में पढ़ने की जिज्ञासा खुद-ब-खुद उत्पन्न हो जाती है। दूसरी तरफ़ यदि बच्चा अपने आस-पास के वातावरण में माता-पिता तथा अन्य वयस्कों को अखबार, मैगज़ीन आदि पढ़ते हुए देखता है, तो उसके स्वभाव में पढ़ने की रुचि स्वयं जागती है। माता-पिता अथवा अभिभावकों को बच्चों को भी उनके स्तर की सचित्र व आकर्षक पुस्तकें लाकर देनी चाहिए। यह भी एक तरह से बच्चे को पढ़ाने के लिए तैयार करना है। इसके विपरीत यदि आप निरंतर टेलीविज़न के सीरियल ही देखते रहते हैं, तो बच्चे पर भी वैसा ही असर पड़ेगा। टेलीविज़न के सामने अधिकाधिक समय बिताने से छोटे बच्चों पर बहुत बुरा असर पड़ता है। ऐसे में चाहिए कि बच्चों से रोचक गतिविधि कराई जाए। और कहानी जैसी रुचिकर क्रिया से बच्चों का मनोरंजन किया जाए।

प्रस्तुत लेख में इस विषय पर विशेषकर चर्चा की गई है कि

- कहानी का महत्त्व क्या है?
- कहानी का चुनाव या चयन कैसे करना चाहिए?
- कहानी किस प्रकार सुनानी चाहिए?

कहानी का महत्त्व

बाल मन बहुत कोमल होता है। हम बच्चों को जिस प्रकार का वातावरण देते हैं, बच्चे के मन पर उसका वैसा ही प्रभाव पड़ता है। इसीलिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि बच्चों को उनकी आयु के अनुरूप कहानियाँ सुनाई जाएँ। आजकल 'कहानी कहने' को बच्चों के मानसिक विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम माना जाता है। आजकल अभिभावक अपने बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक तथा भाषायी विकास के लिए बहुत जागरूक हो गए हैं। ऐसे में 'कहानी सुनाना' स्कूल व घर में एक अत्यंत महत्वपूर्ण गतिविधि हो गई है। शिक्षक को यह चाहिए कि अपने स्कूल के टाइमटेबल या कार्यक्रम योजना में कहानी के लिए भी समय रखें। कहानी बच्चों का ध्यान बहुत सरलता से अपनी ओर खींच लेती है और साथ ही बच्चों को भरपूर मनोरंजन व पढ़ाई के बोझ से राहत दिलाती है। यही नहीं, कहानी के माध्यम से शिक्षक कई अवधारणाओं को सरल तरीके से समझा सकते हैं।

अकसर कहानी सुनते समय बच्चे शब्दों के मतलब सरलता से समझ लेते हैं और उन शब्दों का उपयोग अपनी दिनचर्या में इस्तेमाल किए जाने वाले वाक्यों में सुगमता से कर पाते हैं। कहानी के माध्यम से उन्हें

कई विषयों से संबंधित सामान्य जानकारी भी मिलती है और वे धीरे-धीरे किताबों में रुचि लेने लगते हैं। इस तरह बच्चों को कहानी सुनाने से उनमें कहानियों के प्रति ज्ञान व पठन तत्परता (reading/readiness) भी आती है, यानि वे पढ़ने के लिए तैयार होने लगते हैं। छोटे बच्चों में कहानी सुनने की ललक व Print awareness और भी तीव्र होती है, जब वह–

- अपने आस-पास, माता-पिता, बड़ों व अन्य को पढ़ते हुए देखता है,
- बड़ों द्वारा कहानी सुनता है,
- कहानी सुनने के लिए किताबों की माँग करता है,
- दूसरों के साथ कहानी की किताब के पन्ने पलटता है,
- पुस्तक को पढ़ने का अभिनय करता है तथा अपने से छोटे भाई-बहन को सचित्र पुस्तकें दिखाता है।

कहानी नैतिक मूल्य और सामाजिक कौशल को बच्चों में ढालने में भी मदद करती है। कई बार कहानी सुनते समय बच्चे को महसूस होता है कि वह कहानी के पात्र से मिलता-जुलता है। उदाहरण के तौर पर 'अगर बच्चा खेल के बाद वस्तुओं को अपनी जगह वापिस नहीं रखता, बल्कि फैलाकर रखता है, तो कई बार बार-बार टोकने की बजाय अगर आप कहानी के माध्यम से इस बात को समझाएँ तो बच्चे पर सीधा असर पड़ेगा। वह अप्रत्यक्ष रूप से इस बात को समझेगा, नहीं तो वह इस प्रकार की हरकत करता है जो ठीक नहीं है।

कहानी छोटे बच्चों को अभिनय करने के नए-नए अवसर प्रदान करती है और साथ ही घटनाओं को क्रम से समझने में भी मदद करती है। 'कहानी कार्ड' को घटनानुसार क्रम से लगाते हुए बच्चे जब कहानी कहते हैं, तब उनका क्रमबद्ध चिंतन, शब्दभंडार, तथा बाएँ से दाएँ की दिशा में कार्य करने के कौशल विकसित होते हैं। उदाहरण के लिए कहानी **सैर सपाटा*** नीचे दी गई है-

छाता, गेंद और डिब्बा- *तीनों निकले सैर पर...*

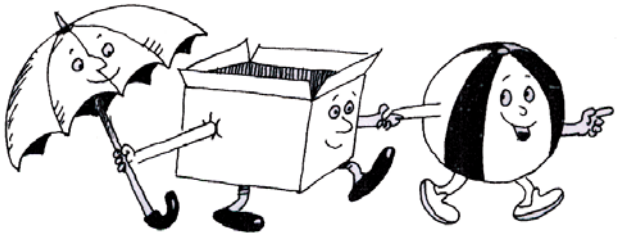

बारिश आ गई, कैसे बचें!

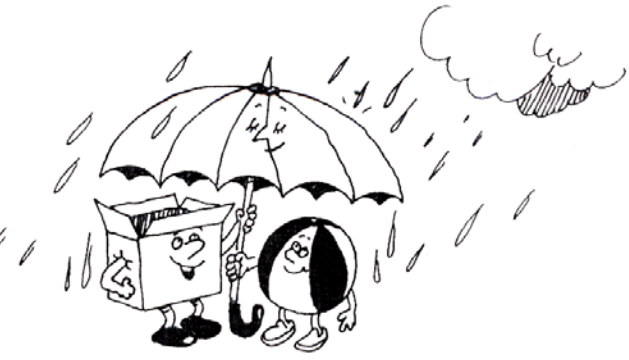

* कहानी हरियाणा प्रारंभिक शिक्षा परियोजना परिषद्, चंडीगढ़ से प्रकाशित पुस्तक *हँसते-गाते* (कक्षा-1) से साभार ली गई है।

नदी आई, कैसे करें पार!

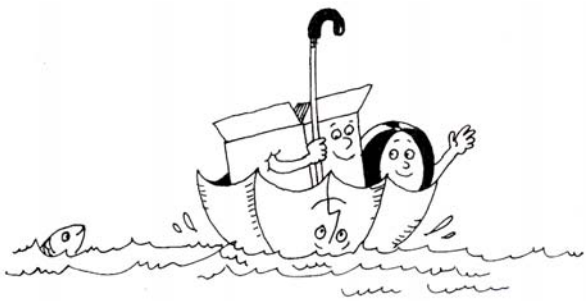

रात हुई, जानवरों का डर। क्या करें!

अगली सुबह तीनों फिर बढ़े, अपनी सैर पर...

कहानी सुनाने के बाद आप कहानी से संबंधित रोचक गतिविधियाँ करा सकते हैं, जैसे– बच्चों से पूछा जा सकता है कि बताओ आगे क्या हुआ होगा? इस गतिविधि से जहाँ बच्चों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर मिलेगा, वहीं उनकी कल्पनाशीलता का भी विकास होगा। यही नहीं ऐसी गतिविधियों द्वारा बच्चों का आकलन भी बड़ी सरलता तथा सहजता के साथ किया जा सकता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे खेल-खेल में कहानी सुनते हुए खासतौर से सचित्र पुस्तकों के माध्यम से धीरे-धीरे पढ़ने की तैयारी कर लेते हैं, यानि कि कहानी की किताब में वाक्यों के नीचे परिशिष्ट (index) उँगली को बाएँ से दाएँ की दिशा में फ़ेरना बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार करता है। यह रुचिकर पढ़ने की तैयारी की क्रिया है। इससे बच्चों को लिखे हुए वाक्यों का महत्त्व भी समझ में आता है। शिक्षक को चाहिए कि प्रभावशाली रूप से कहानी सुनाने के लिए वह स्वयं कहानी सुनाने के लिए उत्साह तथा रुचि जगाए। आरंभ में हमने इस बात पर चर्चा की कि कहानी सुनने-सुनाने से बच्चे कितनी प्रकार से लाभ उठा सकते हैं, किंतु हमने यह तो जाना ही नहीं कि कहानी का चुनाव या चयन किस प्रकार करना चाहिए। आइए नीचे दिए गए बिंदुओं को ध्यान से पढ़ें-

- कहानी बच्चों के आस-पास के वातावरण से संबंधित होनी चाहिए। जैसे- जानवर, पेड़-पौधे, पक्षी, त्यौहार रोज़मर्रा की पारिवारिक घटनाएँ आदि।
- कहानी सचित्र होनी चाहिए।

- कहानी का चयन बच्चों की आयु के अनुसार होना चाहिए।
- छोटे बच्चों को डराने व भयभीत करने वाली कहानियाँ नहीं सुनानी चाहिए
- कहानी जहाँ तक संभव हो, यथार्थ से जुड़ी होनी चाहिए। राक्षस, परियों की कहानी न ही कहें तो बेहतर है। अभी बच्चे वास्तविक जगत् से परिचित नहीं हुए और हम उन्हें अवास्तविक/काल्पनिक में ले जाते हैं।
- 5 से 6 आयु वर्ग के बच्चे यथार्थ को कल्पना लोक से अलग कर पाने में सक्षम होते हैं। इन्हें सुनाई जानेवाली कहानियाँ 3-4 वर्ष आयु वर्ग से थोड़ी जटिल हो सकती हैं।
- 7 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चे लोककथा, पशु-पक्षी, विज्ञान तथा अन्य रोमांचक कहानियों से आनंदित होते हैं। ये बच्चे छोटे बच्चों के विपरीत लंबी कहानियाँ अधिक पसंद करते हैं, किंतु ये भी कहानी पढ़ने की बजाय किसी बड़े से कहानी सुनना अधिक पसंद करते हैं।
- बच्चे की रुचि, जिज्ञासा व समझ के अनुसार कहानी का चयन करें।
- छोटे बच्चों की कहानी की पुस्तक उनके हिसाब से आकर्षक, रंगीन, सचित्र व मोटे अक्षरों में होनी चाहिए। हालाँकि आप पुस्तक व किसी भी दृश्य माध्यम के बिना भी कहानी बखूबी सुना सकते हैं।
- कहानी के विविध प्रकारों का चयन करें जो विविध श्रेणियों की हों, अर्थात् कहानी को विविध संदर्भों में रखकर देखा जाए।
- स्कूल का पुस्तकालय तथा पब्लिक लाइब्रेरी से पुस्तकें ली जा सकती हैं।
- कहानी का विषय या मुख्य मुद्दे की महत्ता होनी चाहिए। कहानी की पुस्तक अथवा कहानी ऐसी होनी चाहिए कि मस्तिष्क पर एक छाप छोड़े। अन्य शब्दों में अच्छी कहानी व पुस्तक बच्चे हमेशा याद रखते हैं और दोबारा-दोबारा उन्हें सुनना पसंद करते हैं।
- कहानी के साथ-साथ उनके पात्र भी सुदृढ़ व सकारात्मक होने चाहिए। ऐसी कहानी न कहें, जो किसी भी प्रकार की रुढ़िवादिता को दर्शाती हो। जैसे-लड़की हमेशा घर का काम करती हुई नज़र आती है, या गुड़िया से खेलती रहती है। क्यों नहीं हम ऐसी कहानी सुनाते जहाँ लड़की भी खेलती है, पतंग उड़ाती है, लड़के गुड़ियों से खेल रहे हैं।
- कहानी छोटी व सरल होनी चाहिए।

एक बार कहानी का चयन करने के बाद कहानी सुनाने के लिए तैयारी व व्यवस्था करना तथा उसे कैसे सुनाया जाए, यह आप पर निर्भर करता है। दुर्भाग्यवश कई शिक्षक बच्चों को कहानी तो सुनाते हैं, किंतु उसकी तैयारी के लिए समय नहीं निकालते। अगर कहानी पुस्तक से पढ़कर सुनानी है, तो शिक्षक को चाहिए कि वह कहानी भली-भाँति पढ़े, जिससे वह किताब के हर पृष्ठ तथा कहानी के उद्देश्य से परिचित हो जाए।

- कहानी की घटनाओं के क्रम को भली प्रकार से समझ लें। कहानी के पात्र एवं उनके नाम को स्मरण कर लें।

- कक्षा में कहानी सुनाने से पहले एक बार उसका अभ्यास अवश्य कर लें, किंतु रटें नहीं। उसे समझकर अपने शब्दों में कहें।
- अगर दृश्य सामग्री, जैसे– कठपुतली आदि के साथ कहानी सुनाई जा सकती है, तो पहले उसका अभ्यास कर लें।
- उचित हाव-भाव के साथ अभ्यास करें।
- कहानी में आए कठिन शब्दों के लिए सरल शब्द ढूँढकर रखें, जिससे कहानी सुनाते समय बिना विघ्न के धाराप्रवाह कहानी चलती रहे।

कैसे सुनाएँ कहानी?

ध्यान रहे, आप बिना दृश्य सामग्री के भी स्वयं से हाव-भाव द्वारा खूबसूरती से कहानी सुना सकते हैं।

1. फ्लिप चार्ट– कहानी के चित्रों को बड़े चार्ट पेपर पर चिपकाएँ व स्पाइरल बाइंड करा दें। फिर कहानी से संबंधित वाक्यों को चार्ट के पीछे लिख दें, जिससे कहानी सुनाते समय चित्र बच्चों के समक्ष हों और वाक्य आपके सामने। इस प्रकार शिक्षक कहानी सुनाते समय बच्चों को देख सकते हैं, आँखों से भी उनसे बात कर सकते हैं।
2. तस्वीर या किसी सामग्री द्वारा जैसे– गुड़िया, कठपुतली, खिलौने आदि।
3. फ्लैनल बोर्ड तथा कहानी कट आउॅट्स
4. कैसेट/सी.डी. के साथ कहानी कार्ड या बिना उसके।
5. शिक्षक द्वारा प्रदर्शन।
6. कहानी सुनते समय अभिनय अथवा सुनाई गई कहानी पर अभिनयकरण
7. फ़िल्म, फ़िल्म स्ट्रिप, स्लाइड्स द्वारा
8. मूवी बॉक्स कहानी– गत्ते के डिब्बे का टी.वी. बनाकर अंदर कहानी से संबंधित चार्ट्स रोलर में लगा दें।
9. चॉक टॉक कहानी– श्यामपट्ट पर चित्र बनाते हुए कहानी सुनाएँ।
10. हर बच्चे को कहानी से संबंधित चित्र अथवा सामग्री पकड़ा दें और कहानी कहलवाएँ।
11. कंप्यूटर/ओवर हेड ट्रान्सपेरन्सीज का इस्तेमाल कर सकते हैं।

प्रस्तुतीकरण

- यह ध्यान देने की बात है कि कहानी सुनते समय हर बच्चे के लिए पर्याप्त जगह हो। वह कहानी सुनानेवाले व्यक्ति को उसके हाथ की कठपुतली को साफ़-साफ़ देख पाए।
- सभी बच्चों की तरफ़ ध्यान दें तथा eye-contact बनाए रखें।
- आपकी आवाज़ सभी बच्चों तक पहुँचनी चाहिए। आवाज़ में उतार-चढ़ाव रखें।
- हाव-भाव कहानी व पात्र के अनुरूप रखें।
- खुद भी कहानी का आनंद लें तभी कहानी भी जीवंत होगी। पात्र को जीवंत करने के लिए खुद उस पात्र को जिएँ। उसे महसूस करते हुए कहानी सुनाएँ।
- कहानी को जीवंत, समृद्ध तथा सार्थक बनाने के लिए अपने अनुभवों के आधार पर कहानी सुनाएँ।
- कहानी सुनाते समय बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न पूछें, किंतु कहानी का प्रवाह नहीं टूटना चाहिए।

- कभी-कभी कहानी के पात्रों की जगह बच्चों के नाम का भी इस्तेमाल करें। इससे बच्चों को मज़ा भी आएगा और वे कहानी के पात्रों से अपने-आपको जोड़ पाएँगे।

कहानी तो आपने सुनाई किंतु कैसे सुनाई, बच्चों को कैसी लगी, क्या आप अपने वांछित उद्देश्यों तक पहुँच पाए? स्वयं से प्रश्न पूछें-

- क्या मैंने वाकई कहानी सुनाई या कहानी पढ़ी?
- क्या कहानी सुनाते समय मैंने बच्चों की रुचि बनाए रखी?
- क्या मेरे चेहरे के हाव-भाव कहानी के अनुरूप थे?
- क्या मेरी आवाज़ स्वाभाविक और उत्साहपूर्ण थी? आवाज़ में उतार-चढ़ाव था।
- क्या दृश्य सामग्री उपयुक्त और इस्तेमाल करने में सरल थी?
- क्या बच्चों ने कहानी इत्मीनान से सुनी और कहानी का मज़ा लिया।

शिक्षक निरंतर बच्चों के साहित्य (नया व पुराना) से जुड़ाव रखे। यहाँ यह भी सुझाव ज़रूरी है कि एक अच्छे शिक्षक को बाल साहित्य की अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

❑❑❑